International Journal of Sanskrit Research 2021; 7(5): 261-263

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2021; 7(5): 261-263
© 2021 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 20-07-2021
Accepted: 13-08-2021

Saraswati Sharma
Research Scholar, Sanskrit department, Mohanlal sukhadia University, Udaipur, Rajasthan, India

Corresponding Author:
Saraswati Sharma
Research Scholar, Sanskrit department, Mohanlal sukhadia University, Udaipur, Rajasthan, India

नारी श्रृंगार व आभूषण

Saraswati Sharma

प्रस्तावना

श्रृंगार नारी का सहज स्वभाव है। श्रृंगार हेतु प्रकृति प्रदत्त विभिन्न साधनों का उपयोंग कर देह को आकर्षक योग्य बनाना श्रृंगार का उद्देश्य है । प्रत्येक युग में विभिन्न सभ्यता काल के अवशेष वैदिक व लौकिक संस्कृत साहित्य, रामायण व महाभारत, प्राचीन मूर्ति कला, स्थापत्य, बौद्ध व जैन साहित्य, ज्योतिष व आयुर्वेद आदि में श्रृंगार प्रसाधन के विभिन्न आयामों का वर्णन मिलता है।

सौन्दर्य, भावना, स्वास्थ्य वर्धक, प्रणय–कामना, कलात्मक जागृति, आकर्षण मांगलिकता आदि प्रसाधन के आधारभूत प्रयोजन प्रतीत होती है । श्रृंगार के साधनों के साथ मांगलिक विचार जुड़ते ही सौभाग्यवती स्त्री हेतु जो अपने पति की दीर्घायु की कामना करती है वह स्त्री हल्दी, कुंकुम, सिन्दूर, कज्जल, कंचुक, केसर, ताम्बूल, वलय, कर्णाभूषण, बिन्दी, केशसज्जा, रंगीन वस्त्र आदि धारण करने की रीति प्रचलित हों गई और वही श्रृंगार नाम से प्रसिद्ध हो गई।

'अमरकोश' अमरसिंह द्वारा रचित संस्कृत का मानक शब्दकोष है। अमरकोश के द्वितीय काण्ड में मनुष्यवर्ग में श्रृंगार–प्रसाधन के विविध पक्षों से सम्बन्ध प्रचलित शब्दावली उपलब्ध है।

आकल्प–वेषो नेपथ्यं प्रतिकर्म प्रसाधनम् ।' [1]

'आभूषण' की शाब्दिक व्युत्पति है – आ समन्तात् भूषणम् अलङ्करणम् ।
जो देह की शोभा को समग्र रूप से वृद्धि में सहायक हो वही आभूषण है । आभूषण के प्रति मनुष्य का विशेषरूप से स्त्री का आकर्षण आदिकाल से रहा हे ।

'न कान्तमपि निर्भूषं विभाति वनितामुखम्।'' [2]

आभूषण से रहित स्त्री का सुन्दर मुख भी सुशोभित नहीं होता अर्थात आभूषण सौन्दर्य को अलंकृत कर उसकी उद्देश्य प्राप्ति में महत्वपूर्ण साधन सिद्ध होता है । आभरण विधियों का वर्णन करते हुए भरतमुनि ने उनके चार आयाम बताए है –

चतुर्विद्यन्तु विज्ञेयं नाट्ये ह्याभरणं बुधैः।
आवेध्यंबन्धनीयञ्च क्षेप्यमारोप्यमेव च ।। [3]

प्राचीन समय से ही आभूषण का आधार प्रकृति रही है । पुष्प प्रकृति का सुकोमल, सुन्दर, सुगन्धमय आकर्षक उपहार है । पुष्प में प्राकृतिक रूप रस और गंध का त्रिवेणी संगम होता है । स्त्री के यौवन व सौन्दर्य का पुष्पों से अटूट अन्तः संबंध है।

वेष्टितं वितञ्चैव सङ्घात्यं ग्रन्थिमतथा।
प्रालम्बितं तथा चैवं माल्यं पञ्चविधं स्मृतम्।। [4]

पुष्प सज्जा के साथ–साथ प्राचीन समय में प्रकृति प्रदत्त कुछ अनुलेपो द्वारा त्वचा की सुरक्षा व निखार का ध्यान रखा जाता था जो सौन्दर्य वृद्धि में महत्वपूर्ण साधन सिद्ध होते थे ।

''कर्णार्पितो लोध्रकषायरूक्षे गोरोचनाक्षेप नितान्तगौरे।
तस्याः कपोले परभाग लाभाद्बबन्ध चक्षूंषि यवप्ररोहः।। [5]

महाकवि कालिदास ने श्रेष्ठ सौन्दर्य को ही लाक्षणिक अर्थ में सच्चा आभरण या प्रसाधन माना है ।

''आभरणस्याभरणं प्रसानविधेः प्रसाधनविषेशः ।। [6]

ऑखो के दो भाग हैं । कृष्णभाग और श्वेतभाग । ये दोनों भाग सुव्यक्त, चमकदार, सजल और विशाल होने पर नेत्रों का सौन्दर्य प्रस्फुटित होता है । श्वेतभाग पर हल्के लाल रेशों का संगम उनमें मादकता भर देता है ।

लोचने हरिणगर्वमोचने मा विदूषय नताङ्ि.ग कज्जलैः ।
सायकः सपदि जीवहारकः किं पुनर्हि गरलेन लेपितः ।। [7]

नेत्रों के श्वेत श्याम भागों को स्पष्ट विभक्त करने हेतु अत्यन्त प्राचीन काल से अंजन व काजल का प्रयोग किया जाता रहा है । विश्व के सभी भागों, जातियों व सभ्यताओं में आभूषणों को धारण करने की परम्परा सभी वर्गों के लोगों में प्रचलित रही है । भारतीय स्त्री–पुरूष दोनों ही प्राचीनकाल से आभूषण–प्रेमी रहे हैं ।
वैदिक युग में ही यह आस्था प्रचलित हो गयी कि स्वर्णाभूषण धारण करने वाले को राक्षस, पिशाच, भूत–प्रेत नहीं सताते है तथा रोगों का भी नाश हो जाता है, क्योंकि यह देवताओं का उत्पन्न किया हुआ प्रथम तेज है ।

देवानामोजः प्रथमजम् ।
अतः जो स्वर्णाभूषण धारण करता है वह देव लोक में दीर्घकाल तक रहता है तथा पृथ्वीलोक में अपनी आयु की वृद्धि करता है ।

शुचिना भूषणं धार्यं दिव्यरत्न–विनिर्मितम् ।
रत्नाधिदेवतास्तुष्टा यच्छन्ति महतीं श्रियम् ।। [8]

आभूषण व सौन्दर्य दोनों एक–दूसरे के शोभावर्धक होते है । बराहमिहिर वस्तुतः आभूषण से अधिक महत्व नारी के सौन्दर्य के देते हैं, जिसके अंग–संग से ही आभूषण 'आभूषण' कहलाने के पात्र बनते हैं, अन्यथा उनका कोई महत्व नहीं ।

रत्नानि विभूषयन्ति योषा भूष्यन्ते बनिता न रत्नकान्त्या ।
चेतो वनिता हरत्यरत्ना नो रत्नानि विनाङ्.गनाङ्.गसङ्.गम् ।। [9]

नाट्यशास्त्र व अमकोश में प्रदत्त आभूषण सूची का वर्णन एवं उसकें अनुसार स्त्रियों के कुछ विशिष्ट स्वर्णाभूषणो के नाम निम्नलिखित है –

1. शिरोभूषण – चूड़ामणि, चूलिभूषण, शीर्षजाल, शिखापाश ।
2. कर्णाभूषण – कुण्डल, कर्णिका, तालपत्र, कर्णफूल, श्रवणवालिका ।
3. नासाभूषण – नासाग्रजाग्रन्मणि, बुलाक, नासामाक्तिक ।
4. कंठाभूषण – ग्रीवापट्ट, कंठहार, निष्क (वैदिक युगीन आभूषण), रूक्म, कंठसूंत्र, सुवर्ण सूत्र ।
5. बाहूभूषण – केयूर, अंगद, भुजपाश ।
6. मणिबंधभूषण – कटकवलय, हस्तपत्र, आवापक, रूचक, चूलिका ।
7. हस्तभूषण – ऊर्मिका (अंगूठी), वेतिका, अंगुलिमुद्रा, अष्टवज्र, त्रिहीरक, शक्तिमुद्रिका, नागमुद्रिका ।
8. कटिभूषण – मेखला, कांची, सप्तकी, रशना, सारसन, तलक, कपाल । [10]
9. पाद–गुल्फ–भूषण – नूपुर, किंकिणीका, घण्टिका, रत्नजालक, सघोष, पादवलय, पादचूडक, यमला (बिछूआ), तुलाकोटि । [11]

यह आभरण मुख्यतः स्वर्णनिर्मित होने पर ही शुभ माने जाते है ।
संस्कृत साहित्य में कवियों द्वारा श्रृंगार व श्रंगार के विभिन्न आयामों का जो ज्ञान प्राप्त होता है वह श्रृंगार के मार्ग का अग्रगामी है,

स्तनन्यस्तोशींर शिथिलितमणालैकवलयं
प्रियायाः साबाधं किमपि कमनीयं वपुरिदम् ।
मसस्तापः कामं मनसिजनिदाध प्रसरयो –
र्न तु ग्रीष्मस्यैवं सुभगमपराद्धं युवतिषु ।। [12]

अनुलेपन, पुष्प सज्जा, आभूषण एवं सौन्दर्य को समाविष्ट करता यह श्लोक कामवेदना तथा ग्रीष्मतापवेदना को समरूप दर्शाता है ।
कालिदास ने नारी सौन्दर्य वर्णन हेतु प्रायः प्रकृति से ही उपमान लिए है । सहज सौन्दर्य को प्रसाधन देते हुए कवि ने वस्त्र., आभूषण, पुष्प व अनुलेपन आदि प्रसाधनों को पूर्ण केन्द्र में रखा है। नारी सौन्दर्य के प्राकृतिक व कृत्रिम दोनों पक्षों को समान महत्व प्रदान किया गया है । कोई स्त्री की सहज शोभा को महत्व देता है, तो कोई अलंकार प्रसाधन युक्त सौन्दर्य को महत्व देता है। नारी व पुरूष के विषय में दोनों का सौन्दर्य आपस में एक–दूसरे को आकर्षित करता है, परन्तु सामान्यतया नारी को ही श्रृंगार, सौन्दर्य, आकर्षण का केन्द्र माना जाता है।
महाकवि कालिदास ने 'कुमारसम्भवम्' महाकाव्य में नायिका पार्वती का नखशिख वर्णन किया है तथा उनके तीनों नाटकों अभिज्ञानशाकुन्तम्, मालविकाग्निमित्रम् तथा विक्रमोर्वशीयम् की नायिकाऍ अतीव रूपवती व युवावस्था सम्पन्न है । तीनों नाटको में कालिदास ने नारी के प्रकृति प्रदत्त सौन्दर्य का वर्णन किया है ।

सरसिजयविद्धं शैवलेनापि रम्यं
मलिनमपि हिंमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति ।
इयमधिकमनोज्ञा कल्कलेनापि तन्वी,
किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम् ।। [13]

मालविकाग्निमित्रम् की नायिका मालविका के लिए 'अव्याजसुन्दरी' तथा 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' की नायिका हेतु 'इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्नी; की सहज संज्ञा सौन्दर्य का ही पोषक है ।
श्रृंगार – प्रसाधन, पुष्पसज्जा, अनुलेप के साथ–2 वस्त्रो का भी सौन्दर्य वृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान है वह वस्त्र चाहे रत्नजड़ित हो या वल्कल वस्त्र हो ।

वसने परिधूसरे वसाना
नियमक्षाममुखी धृतैकवेणिः ।
अतिनिष्करूणस्य शुद्ध शीला,
मम दीर्घं विरह व्रतं विभर्ति ।। [14]

साराशंतः प्राचीन काल में नारी श्रृंगार व आभूषण का प्रकृति से प्रगाढ़ सम्बन्ध था, आभूषण धारण करना शारीरिक सौन्दर्य की अभिवृद्धि का आशय था जो वर्तमान समय में पूर्णतः परिवर्तित होता नजर आ रहा है। प्रकृति प्रदत्त प्रसाधन का स्थान रासायनिक पदार्थों से निर्मित साधनों ने ले लिया जो मानव व प्रकृति दोनो हेतु घातक है।
वर्तमान संस्कृति में शरीर के सुख व सौन्दर्य की अवधारणा ने जीवन के अन्य लक्ष्यों को गौण कर दिया है। मानव प्रकति से दूर,,स्वयं व प्रकृति को नुकसान पहुंचाने वाले मार्ग की और बढ रहा है। इससे बचने व सुरक्षित होने का उपाय हमारे साहित्य, वेद, काव्यों में ओत–प्रोत है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. अमरकोष 02/06/99. पृ. 147–148
2. भामहकृत – काव्यालाङ्.कार – 1/13
3. नाट्यशास्त्र – 23/12
4. नाट्यशास्त्र – 23/11
5. कुमार सम्भव – 7/17
6. विक्रमोंर्वशीयम्, अंक 2, पृ. 3
7. सूक्ति सागर, 94

8. मानसोल्लास – सोमेश्वर कृत – 3/8/1185
9. बृहत्संहिता 74/2 – स्त्री प्रशंक्षा अध्याय
10. नाट्यशास्त्र – भरतमुनि – 23/37–39
11. अमरकोष – अमरसिंह
12. अभिज्ञान शाकुन्तलम्, अध्याय–तृतीय, श्लोक 6, पृ. 218
13. अभिज्ञान शाकुन्तलम्, अध्याय–प्रथम, श्लोक 17, पृ. 135
14. अभिज्ञान शाकुन्तलम् , अध्याय–सप्तम , श्लोक 21, पृ. 468